दिनांक–15.02.2025

UG Third Semester MJC (Philosophy)

# चार्वाक दर्शन और इसके प्रमुख सिद्धांत

चार्वाक दर्शन भारतीय दर्शन का एक महत्त्वपूर्ण और प्राचीन संप्रदाय है, जिसे भौतिकवादी और नास्तिक दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है। इसे लोकायत या बृहस्पति दर्शन भी कहा जाता है। चार्वाक दर्शन का मुख्य उद्देश्य जीवन का भोगवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करना है, जिसमें भौतिक सुख और आनंद को प्राथमिकता दी जाती है। इसके प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं–

1. **प्रत्यक्ष प्रमाण** : चार्वाक दर्शन के अनुसार, केवल प्रत्यक्ष अनुभव और इंद्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान ही सत्य है। यह दर्शन अनुमान, उपमान और शब्द (श्रुति) जैसे अन्य प्रमाणों को अस्वीकार करता है। प्रत्यक्ष प्रमाण को ही अंतिम सत्य मानते हुए, चार्वाक दर्शन ने अन्य दार्शनिक प्रणालियों की आलोचना की है।
2. **नास्तिकता** : चार्वाक दर्शन ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म और मोक्ष जैसे आध्यात्मिक और धार्मिक सिद्धांतों को अस्वीकार करता है। इसके अनुसार, ईश्वर का अस्तित्व कल्पनामात्र है और मृत्यु के बाद कोई जीवन नहीं होता। आत्मा और पुनर्जन्म को नकारते हुए, यह दर्शन भौतिक शरीर और जीवन को ही वास्तविक मानता है।
3. **भोगवाद** : चार्वाक दर्शन का मानना है कि जीवन का मुख्य उद्देश्य सुख और आनंद प्राप्त करना है। यह दर्शन भोगवादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए कहता है, 'जब तक जीवन है, तब तक सुख भोगो।' चार्वाक दर्शन में नैतिकता और धर्म के नियमों को भी अस्वीकार किया गया है, और इसे व्यक्तिगत सुख और संतोष से अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं माना गया है।
4. **भौतिकवाद** : चार्वाक दर्शन के अनुसार, केवल भौतिक पदार्थ ही वास्तविक हैं और चेतना, आत्मा या अन्य आध्यात्मिक तत्त्व भौतिक पदार्थों के संयोजन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं। यह दर्शन कहता है कि पंचमहाभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, और आकाश) से ही समस्त सृष्टि का निर्माण हुआ है।

चार्वाक दर्शन ने भारतीय दर्शन और समाज में भौतिकवादी और नास्तिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया और विभिन्न धार्मिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों की आलोचना की। इसके सिद्धांतों ने विचारशीलता और तर्क के माध्यम से जीवन के भौतिक पक्ष को प्रमुखता दी है।

**डॉ. श्रवण कुमार मोदी**
**सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग**
**शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय**
**बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण**
**मो0–9608685335**
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com